



मैं किसी भी रचना के पीछे भी विचार-प्रक्रिया के पहलू को नहीं नकारता। बहुत विचार करना पड़ता है, लेकिन सिर्फ विचार से काम नहीं बनता। डेक्कन और गायाम पर पकड़ नहीं आती। मेरा दृढ़ विश्वास है कि साना और पण्डितता अपरिहाय है। चिन्तकरी सिर्फ विचार-प्रक्रिया के द्वारा ही नहीं होती, चिन्तकरी के लिए एकाग्रता बहुत जरूरी है। रचना तादात्म्य बहुत जरूरी है, लेकिन तनाव का एक मुकाम ऐसा होता है, जब विचार-प्रक्रिया धीमी हो जाती है और सहजबुद्धि खाती हो जाती है। ■ सैयद रज़ा

नी से दिखती अगियानी के चित्र बनाता।

है- $1.20 \text{ मी} \times 2.40 \text{ मी}$, लेकिन यह बहुत कठिन साबित हुई। दूसरे सैनी पाहो नाल याद था। मैंने कहा कि 'पूरी सैनी पाहो नाल' की, देस्ता नाल है। मैंने लगा रहा और अठिहर पूरे उसकी शलक दिखने लगी। चित्र आगे या गया, लेकिन उसने आगे या करी समय लिए और उसने मुझे वाद आनी दूसरा फल बयाना। उसका आकार कुछ छोटा रहा- $1 \text{ मी} \times 1 \text{ मी}$ और कुछ पाहो दिन मैंने हाथ पारी हुआ। मैंने सो करके बताया हो। मैं तो बता रहा, जितना है और चित्रकार के रूप में 50-60 बरस के अनुपात के बाद मैं खुद को बता सकता है कि मुझे पेटे पेट काला नहीं आता और मैं परमसुख करता है कि यह बोध कलकार या निगार नहीं है। इसे ऐलिया की पुण्योर्ष के एक कलकार की याद आती है।

श्री

कला देवताओं की चर्चार्डमेंट है

एक महान शिल्पी ने अपनी रचना को देखा, जिस पर उसने महीनों, शायद बरसों लगातार काम किया था और हैरान होकर उसने सोचा— यह मैंने क्या किया ? नहीं, यह तो अकस्मात आया ! अब मैं जानता कि यह अकस्मात नहीं होगा, यह तो देवों का है । भारतीय शास्त्रीय नृत्य में ऐसा माना जाता है कि कला देवताओं को चढ़ाई गई भेंट है, अपना ही वह नहीं सकता कि

नहीं, लेकिन कई और
अनुभव रहा है और
हूँ कि यह विचित्र है
जो रची जा सकती है
लिए बहुत कठिन
एकाग्रता जरूरी है
स्रोतों से आती है, वि
लगभग अस्मंभव है।

एक पिछि उगाड

इस विषय में सहजना है

अनुभव इसका प्रमाण है। कभी-कभी ऐसा होता है कि आपके सामने एक खाली जगह भर होती है और ऐसा लगातार कई दिन तक चलता है। आपको बोध नहीं हो रहा। आप उसे देख ही नहीं पा रहे।

श्री गणेशाय नमः

आंतरिक दृष्टि विकसित नहीं हो रही। यह भी जुड़ तक नहीं है। मेरा पूरा विश्वास है कि देवी शक्ति का सहयोग न हो तो आप कल का सुन नहीं कर सकते। दारभल चित्रकारी मैं नहीं करता। एक कलाकार के लिए देवी शक्तियों का सहयोग बहुत जरूरी है। एक उदाहरण देता हूँ। हाल ही में एक चित्र पर काम कर रहा था—सूर्य नमस्कार। मैंने कम से कम पांच-छह हफ्ते इस पर काम किया। यह टिक-टॉक आकार की

मेरा विद्यार्थी प्रार्थना में है। मैं मानता हूँ कि मेरे लिए प्रार्थना महत्वपूर्ण है। मेरे जीवन और मेरे काम में उसके बारे में बात करना बहुत कठिन है। आप यह कैसे बता पाएंगे कि प्रार्थना में, मीन के श्लोचों में और आनंद तथा आध्यात्मिक पीढ़ा के श्लोचों में आप कैसे मगसूस करते हैं ? मैं अनुभव करता हूँ कि मेरे लिए यह संवाद महत्वपूर्ण है। कबीर ने किताबी

दुख में सुगमन सब को सुख में कोने में कोय।
जो सुख में सुगमन करे दुख को हरी कोय।
सबसे सुगमनवान् बात है यह सुख जो।
शक्तियों से संवाद होता है, बुध्दयाप पूर्ण सम्पन्न।
भर में पिताजी पवों सम्पन्न मान्य पकरो, हमें नरके
सुख नमान पड़ना अच्छा लगता। जाय मैं यह आदर है।
ध्यान में टिकी, -केशी, केशी पण्डित भड्डता, कभी हमारा
ध्यान न टिकता, -केशी पण्डित जो अंग देते।
एक है कि, नमान इस्माम की बात, जहरी चीजों में से
एक है। अस्तित्व है अलगवा यह बात है कि
सदा से आसक्ति रहा है, और मुझे पुरा लगता है कि
आस्था अपने में या तो होती है या नहीं होती।
आप में मान कर से होती है तो लगाना जीवन भर
सुख और दुख में यह आस्था संभव होती है। मैं तो यहाँ
लेकिन अपना है, रोमनों के जीवन में लगातार भिन्न
है। यह कहना है, यह कहना है, यह कहना है।
यह कहना है, यह कहना है, यह कहना है।
यह कहना है, यह कहना है, यह कहना है।

एकामयता जरुशी है

मैं किसी भी रचना के पोछे को विचार-प्रक्रिया के पथत्व को नहीं मसालता। बहुत विचार करना पड़ता है, लेकिन सिर्फ विचार से काम नहीं चलता। टेक्निक और माध्यम पर एक डक का नहीं आता। मेरा दृढ़ विश्वास है कि साधना और एकपक्षी अपरिहार्य हैं। चित्रकारी सिर्फ विचार-प्रक्रिया के द्वारा ही नहीं होती। चित्रकारी के लिए एकपक्षी बहुत जरूरी है। रचना से गहनतम बहुत जड़ना है, लेकिन तबना का एक फुलम ऐसा आता है जब विचार-प्रक्रिया धीमी हो जाती है और सारा जड़ना ही जाती है। जब हाथों की जाली

है और मैं खुद से यह पूछना तक छोड़ देता हूँ कि मैं क्या रहा हूँ, बस विचार है और उसे कैलास पर उतारता मैं विचार-प्रक्रिया उतका एक हिस्सा है और आप उस मुकाम पर पहुँचे जायें, जिसे जर्मन दुस्मानी यात्री मुह, बातावरण कहते हैं (फिर लोग उसे मेम की स्थिति कहते हैं), जहाँ तो चीजें हो ही जाती हैं। मानस प्रत्यक्ष ही सबसे महत्वपूर्ण बात है। मेरा अपना

20

एक विचित्र उ इस विषय

आंतरिक दुर्घि विकसित नहि होरी, वह मीनद तक नहि है। मोगी मुप विहराम है कि देसी शक्तिवो सहयोग न हो तो आप कला का सपना नहि कर सकतो। दासल शक्तिवो मी नहि होत, एक कलाकार को तप देसी शक्तिवो का संयोग बहुत जरूरी है। एक उदहारण देता हूं हाल ही में एक पित्र प काम कर रही था मुप नगरिका। मी काम से कम पित्र-पूठ होरी इस प काम किया। यह ठीक-ठाक मीनद को नहि देसत कि देसी शक्तिवो का सयोग न होत तो आप कला का सपना नहि कर सकतो।

एक महान शिल्पी ने अपनी रचना को देखा, जिस पर उसने महीनों, शायद बरसों लगातार काम किया था और हैरान होकर उसने सोचा— यह मैंने क्या किया ? नहीं, यह तो अकस्मात आया ! अब मैं जानता हूँ कि यह अकस्मात नहीं होगा, यह तो देवों का है । भारतीय शास्त्रीय नृत्य में ऐसा माना जाता है कि कला देवताओं को चढ़ाई गई भेंट है, अपना ही वह नहीं सकता कि

किन्ती, लेकिन कई बरसों से मेरा यह अनुभव रहा है और मैं महसूस करता हूँ कि यह विचित्र अदभुत जलवायु जो रबी जा सकती है और जिसके लिए बहुत कठिन मेहनत और एकाग्रता जरूरी होगी, रहस्यमय स्रोतों से आती है, जिनका विश्लेषण लगाभा उपर्युक्त है।

ਸਾਹਿਬ

10 पा. 12 शाल की आगुपु में बीने में डंडाला में मयंदाली की स्वेच बनवाया। मयंदाली, बगोवा, और उहली के गाँव की स्वेच बनवाया। दोपहर आकर बीने गोपीला के गाँव बनवाया। सुकू किया। हमने फूलों, पीपलों, पुप की छटाओं, प्राकृतिक द्रव्यों के विनामक से स्वेच प्राप्ति बापुलुव अछालने के मारगदंड में सुकू किया। फिर मुईय में भी किया, पुप को एक तरह से लहक में और पा. अब बिच बनवो की च्छा इतनी प्रबली थी और स्वेच में सुकू प्रेम था, इसलिए बीने दसकों गालियों के बिच बनवा, पिरोबोबोबो मेला रोरा था एकरोबो स्वीक स्वीक से दिहली पाली अंगिया। एक्सप्रेस स्वीक स्वीक में सुकू 10 बजे से शाम के 6 बजे तक काम करता। 6 बजे में अपने कागल और कोरी उठता

अवधारणा अधिक महत्वपूर्ण हो ग
प्रेम व आस्था बहुत निजी है

दृष्टिपटल से देखी गई प्रकृति नहीं, बल्कि प्रकृति। हम लोगों में अमुखाता का एक भाव होता है। हमारी स्थितियाँ इससे सुपरिचित हैं। वे जानती हैं कि क्या दिखाना है और क्या छिपाना है। मैं समझता हूँ कि यह

[illegible]

लिख सकते हैं:

प्रेम में वादान की तरह एकत्र

कवि भी यह लिख सकता है। उसे जैसे साधारण लोग नहीं। एक बिंदु देखा है, जिसके आगे कोई साविक अपेक्षित जादव होती है। अमेरिका, इन्डोनेशिया की तरह फ्रांस में भी इस एक ऐसे समय में रहते हैं, जहां सब कुछ पादरती है। दिखाना या राह है प्रकृत किया या राह है, वचन हो रही है। कल्पना के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा गया है। यह सब कुछ दुखी करता है। कल्पनाओं में प्रेम और यही प्रसंग को प्रयुक्त है। कल्पनाओं और साहित्य में और फिल्मों तथा संगीत माध्यमों में भी, मुझे लगता है कि पादरती और वचन के लिए एक ही वचन अच्छी बात नहीं है।

प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार सैयद हैदर रज़ा के यह विचार प्रसिद्ध कवि, लेखक य आलोचक अशोक वाजपेयी से बातचीत पर आधारित किताब 'आत्मा का ताप' का एक हिस्सा है।

हुसैन और रजा की पेंटिंग्स का जलवा

वर्ष 2006 के पहले छह-सात माह में तमाम नीलामियों में एमएफ हुसैन और एसएच रजा की पेंटिंग्स का जलवा रहा। इनकी पेंटिंग्स इन नीलामियों में काफी ऊंचे दामों में बिकीं और दोनों ने इसके जरिये करोड़ों कमाए।

इस अवधि के दौरान अपनी पेंटिंग्स की नीलामी से हुसैन ने 52.46 लाख डॉलर (23.44 करोड़ रुपये) और रजा ने 53.77 लाख डॉलर (24.03 करोड़ रुपये) कमाए। [हां एक दिलचस्प बात यह है कि वर्ष 2000 में हुसैन को नीलामी में पेंटिंग्स की बिक्री से मात्र 27 हजार डॉलर की कमाई ही हुई थी। 2002 में हुसैन को पेंटिंग्स की बिक्री से 1.40 लाख

डॉलर की कमाई हुई थी, जो 2003 में बढ़कर 5.80 लाख डॉलर तक पहुंच गई। 2005 में यह आंकड़ा 59 लाख डॉलर हो गया और 2006 के पहले छह माह में ही हुसैन पेंटिंग्स की बिक्री से 52 लाख डॉलर से ज्यादा कमा चुके हैं। दूसरी ओर एसएच रजा की पेंटिंग्स का जलवा



भी नीलामियों में लगातार बढ़ा है। वर्ष 2000 में रजा की पेंटिंग्स जहां 8700 डॉलर में बिकीं, वहीं 2001 में यह घटकर 1200 डॉलर रह गई। 2002 में रजा ने पेंटिंग्स की बिक्री से 25 हजार डॉलर कमाए तो 2003 में यह आंकड़ा बढ़कर ८३ हजार डॉलर हो गया। 2004 में नीलामियों में रजा की पेंटिंग्स की कीमत 3.75 लाख डॉलर मिली, तो अगले साल यानी 2005 में यह आंकड़ा 40 लाख डॉलर तक पहुंच गया। इस साल के पहले छह माह में रजा पेंटिंग्स की बिक्री से 53 लाख डॉलर से ज्यादा कमा चुके हैं।

